ISSN 2455-5169

डॉ. चन्देश्वर यादव की कविताएं

डॉ. चन्देश्वर यादव

प्रश्न यात्रा

बड़ी सुदीर्घ है
प्रश्नों की जीवन यात्रा
जो कायम रहती है मन में
अनवरत
जिसकी होती है शुरुआत
कब, कहाँ, कैसे, क्या और
क्यों के रूप में
कुछ के उत्तर तो मिल जाते हैं
आसानी से लेकिन
कुछ डाल देते हैं मन में विराम
सोचने के लिए
क्यों तो अक्सर करता है विवश
चर्चा और मनन को
प्रश्नों के होने से ही
बनती है विकास की
संकल्पना
और मानव मन लाता है
सामने नई परिकल्पना
प्रश्नों के उठने से
अक्सर हर कोई हो जाता है
अधीर
इसीलिए प्रश्न यात्रा के वक्त
हम होते हैं अधिक गम्भीर।।

रिश्तों का रेखागणित

स्वार्थपरता और भौतिकता ने
बदल दिया है
रिश्तों का रेखागणित
कोई भी त्रिभुज
चाहे समबाहु हो या
समकोण
बदल लिए हैं अपनी
परिभाषाएं
क्योंकि
यंत्र की महत्ता ने
बदल दी है
रिश्तों की भाषाएं
रिश्तों की आकृति
हो चली है अनिश्चित
विश्वास का नित्य
घोंट दिया जाता है गला
इसीलिए आजकल हर कोई
सोचता है कि कैसे हो
सिर्फ और सिर्फ अपना ही
भला
रिश्तों के सारे प्रमेय
गढ़ने लगे हैं असफलता का
मानचित्र
क्योंकि पश्चिमीकरण का
मानस पटल पर झलकता है
सबके ही स्पष्ट चित्र।।

वेदना

काश! मेरे पिता को
होता अहसास
मेरे होने का
करते स्वीकार कि
मैं ही हूँ उनका
कल, आज और कल
तो न करते मेरी
इच्छाओं का दमन
न ही करते मुझे
प्रताड़ित

और
सुकोमल हाथों में
न थमाते कुदाल
कमजोर कन्धों पर न रखते
जलावन का बोझ
मुझे भी भेजते स्कूल
और कन्धे पर होता
पुस्तकों का बैग।
मेरे कदम बढ़ते
नवसृजन की ओर।
और मुझे भी होता
फ़क्र
अपने होने का।।

नमस्कार!

संकुचित और विकृत सोच तथा
भौतिकतावादी प्रवृत्ति के चलते
बदल गए जीवन के दायरे
राह दिखाने वाला
राह के बाहर और
जिन्दगी में ज़हर घोलने वाला
राह पर
कितना विस्मयकारी दृश्य
चौराहे पर सरपंच और अध्यापक
एक ने सिखाया जीवन
जीने की कला
दूसरे ने पिलाकर मदिरा
डाला झूठ से आँखों पर
घना पर्दा
जो अब और भी हो गया है गहरा कि
भौतिकता की आँधी में
अध्यापक अकेले है चौराहे पर खड़ा
और सरपंच है भीड़ से घिरा
यही है व्यावसायिकता व समय का
चमत्कार कि
आदर सत्कार तो दूर
अब अध्यापक को कोई
करना नहीं चाहता
नमस्कार!

मैं 'हिन्दी' हूँ

मैं 'हिन्दी' हूँ
सुर ताल हूँ मैं प्रेम की,
मैं राग हूँ अनुराग की।
देव वाणी से मैं मुखरित,
मैं मधुर रसधार हूँ।
जोड़ती ब्रह्माण्ड को,
मैं एकता की प्राण हूँ।
प्रतिष्ठित हूँ मैं शिखर पर,
कल, आज, कल की विस्तार हूँ।
मैं 'हिन्दी' हूँ।
मानवता के रक्षा की,
मैं हथियार हूँ।
मैं सदा से कर रही,
बस सत्य की विस्तार हूँ।
भाषाओं में शिरोधार्य,
जन-जन में मैं स्वीकार्य हूँ।
मैं 'हिन्दी' हूँ।।

संपर्क :

डॉ. चन्देश्वर यादव
कटरिया बाबू, सिकटा, सिद्धार्थ नगर, उ.प्र.-272193
mmclkouni@gmail.com